ISSN : 2231 - 380X

AITEA INTERNATIONAL Journal of Education & Humanities

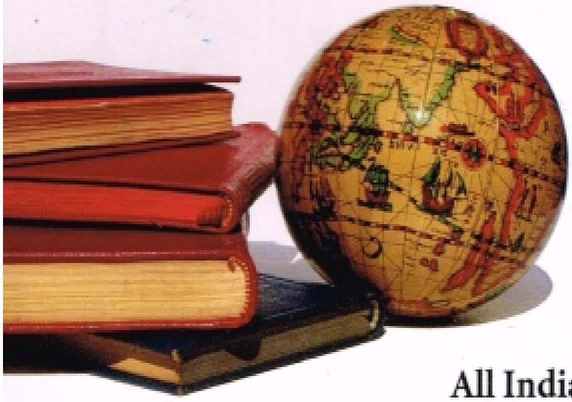

www.aijeh.com

All India Teacher Educators Association®

Vol. 7 (No. 14) October- March 2018

AITEA

Pedagogical Strategies for Modern Education

Tabassum Naqi 109

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में बौद्धधर्म की उपयोगिता

श्रीमती मीना परस्ते 120

उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का विद्यार्थियों की आधयात्मिक बुद्धि पर प्रभाव का अधययन

श्रीमती सुषमा पिल्ले, डॉ. पी.एल. मिश्रा 122

शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में लैगिक भूमिका एंव आत्म-सम्मान की अवधारणा के ज्ञान का उपयोग

सुनीता भार्गव, सन्दीप अरोरा 127

उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती सुषमा पिल्ले[1], डॉ. पी.एल. मिश्रा[2]

शोध सार

कक्षाओं में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को समाज और विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं से कैसे जोड़ा जाए? इसी बात को केन्द्र में रखकर राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा तय करते है। क्योंकि शिक्षा सामाजिक बदलाव के सुदृणीकरण व प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ऐसे में घर, विद्यालय, शिक्षक और समाज के ऐसे सम्मिलित प्रयास की आवश्यकता होती है जिनसे बालकों को अच्छे मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक समायोजन की प्राप्ति में पर्याप्त सहायता की जा सकें। अध्यापक को मूल्यशिक्षा का **अग्रदूत** कहा जाता है क्योंकि विद्यार्थी रूपी बीज में मूल्यों के रोपड़, पल्लवन परिष्करण, परिमार्जन का कार्य वही द्रुतगति व स्थायित्व से कर सकता है आध्यात्मिक लब्धि मनुष्य को प्राप्त ईश्वरीकृत वह वरदान है जो प्रत्येक मानव में संस्कार के रूप में पोषित हो व्यवहारिक स्वरूप में उसकी अस्मिता बन युगतत्व को अनुप्राणित कर दिशा देने के साथ ही युगबोध को विस्तीर्णता दे, जीवन का नियमन कर सृजनात्मकता और रचनात्मकता को दृष्टि प्रदान करती है क्योंकि इस बुद्धि का सीधा संबंध मानवीय जीवन को **अर्थ, उच्च्ता** व **श्रेष्ठता** प्रदान करने से होता है। प्रस्तुतशोध कार्य का उद्देश्य शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का छात्र/छात्राओं-विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है प्रस्तुतशोध के लिये **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है। **न्यादर्श** के रूप में 800 (400 छात्र + 400 छात्राओं) को लिया गया है। **निष्कर्ष** से ज्ञात होता है कि शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का उनके छात्र/छात्रओं, विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ा है।

1. रिसर्च स्कालर, शिक्षा संकाय रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
2. प्राचार्य (सेवानिवृत)शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर

सर्वज्ञात है शिक्षा **'स्व'** से **'सर्वस्व'** तक की प्रक्रिया है इसीलिए प्रत्येक देश अपनी सामाजिक सांस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्ति देने के साथ ही समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी विशिष्ठ शिक्षा - प्रणाली विकसित करता है। **'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'** के सानिधय में मानवीय व्यक्तिव का निर्माण करना सदा ही आर्यावत के शैक्षिक दर्षन का उद्‌देश्य रहा हैं जो "सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात समस्त सांसारिक बंधनों - अभावों से मुक्ति प्राप्त करने हुए **अमरत्व** (मोक्ष जीवन का श्रेष्ठतम विकास) सुनिश्चित करता था और मोक्ष द्वारा **अमरत्व** प्राप्ति का माध्यम **'पुरूषार्थ चतुष्टय'** था। जिसके अंतर्गत जीवन का सर्वोच्च अभीष्ट **लौकिक** (अर्थ, काम) व **पारलौकिक** (धर्म, मोक्ष) उत्कर्ष के रूप में समाहित होता था। जो भारतीयों के जीवन मूल्यों का **अभ्युदय** (पूर्ण भौतिक उत्कर्ष) एवं **नि:श्रेयस** (आध्यात्मिक विकास) सिद्ध होता था।

आध्यात्मिकता इस जीव या ब्राह्मण्ड् के ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है तो बुद्धि वस्तुओं व तथ्यों को समझाने का ज्ञान और इन दोनों का समागम ही अर्थात **आध्यात्म + बुद्धि = अध्यात्मिक बुद्धि** वह लब्धि है जो आध्यात्मिक बौद्धिकता को जन्म देती है जो ज्ञान का ईश्वरीय, शाश्वत रूप होती है। शैक्षिक विद्‌वानों एवं मनोवैज्ञानिकों के अनुसार यह बुद्धि लब्धि का एक ऐसा कारक है जिसे सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता। भौतिक शास्त्री मनोवैज्ञानिक एवं धर्म संबंधी विज्ञान के विशेषज्ञ, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के **डॉ. दनोह जौहर** ने 21वीं सदी के पूर्वाद्ध में एक तीसरी लब्धि के बारे में वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर बताया कि मानव बुद्धि को संपूर्णता प्रदान करने में आध्यात्मिक लब्धि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है यह वह लब्धि है जिसके माध्यम से हम (जीव) अर्थ एवं मूल्य संबंधी समस्याओं का निराकरण करते हैं।

आध्यात्मिक बुद्धि का संबंध अप्रत्यक्ष रूप से **सामाजिक बुद्धि** (थार्नडाइक - 1920) व **संवेगात्मक बुद्धि** (मेयर एवं सालोवी - 1995) से है। समस्या के समाधान के लिये अपनाये गये तरीके आध्यात्मिक बुद्धि है ऐसी बुद्धि जो क्रियाओं से पहले हमें स्वस्थ्य महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सहायता करती है जो क्रिया एवं प्रतिक्रिया में अंतर करना सिखाती है, वह आध्यात्मिक बुद्धि है। **दनोह जौहर (2011) डेविड किंग** ने आध्यात्मिक बुद्धि के अध्ययन में पाया कि ये लब्धि वे मानसिक योग्यतायें है जो बौद्धिक वस्तुओं को महत्व ना देकर वास्तविकता (यर्थार्थ) को समझने से संबंधित हैं। **डेनियल गोलमैन** ने व्यक्ति की इन चार कौशल क्षमताओं का वर्णन आध्यात्मिक बुद्धि को समझने में किया - (1) उच्च स्व-जागरूकता (2) सार्वभौमिक जागरूकता (3) उच्च स्व-दास्ता (4) आध्यात्मिक उपस्थिति और सामाजिक दक्षता। यह लब्धि हमारे मानवीय मूल्य एवं विश्वास की आधरशिला के रूप में रहती है आध्यात्मिकता से हमारे जीवन को उद्‌देश्य एवं अर्थ मिलता है और अभ्यास से जब हम इस बुद्धि का विकास करते हैं तो इसमें हमारे अन्तरभ में स्थायीशांति, विश्वास और प्रेम का विकास होता है यह बुद्धि व्यक्ति को नि:स्वार्थ परोपकार की ओर प्रेरित करती है जिससे उसमें नि:स्वार्थता की भावना का विकास होता है और वह बिना किसी लाभ की अपेक्षा के व्यक्ति समाज और राष्ट्रहित के कार्यो को करने की ओर प्रवृत होता है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि शिक्षा ही एक ऐसा माधयम है जो समाज में व्याप्त बुराइयों एवं कुरीतियों को दूर करने में सहायक हो सकती है परन्तुशर्त यह है कि - शिक्षा और अधिक शिक्षा एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही समाज की बुराइयों को दूर करने में सकारात्मक भूमिका का निर्वाह कर सकती है।" गुणात्मक शिक्षा के दृष्टिकोण से यह महत्वपूर्ण हैं कि विभिन्न कक्षाओं में विभिन्न विषयों के माधयम से जो शिक्षा प्रदान की जाती है, उसका प्रमुख उद्‌देश्य उन विषयों में मात्र उपलब्धि नहीं अपितु विषयवस्तु की समझ को जीवन में व्यवहारिक रूप से उपयोग में लाना है। दूसरा लाभ यह होगा कि विद्यार्थी जीवन में प्राप्त शिक्षा का उपयोग करने में सफल हो जावेगें एवं वास्तव में शिक्षित हो जायेगें।

विभिन्न विषयों में एवं विशेषकर भाषा के विषयों में जो विषयवस्तु होती है वह प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में सहायक हो सकती हैं। अप्रत्यक्षरूप से मानवीय मूल्यों का विषयवस्तु के माध्यम से बताया जाना स्थायी रूप ले सकता है। इसमें शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। शिक्षक मात्र उपलब्धि हेतु सूचनाएँ प्रदान ना करके ज्ञान की वृद्धि के लिए शिक्षण कार्य करें तो उसका विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इसके लिए महत्वपूर्ण है कि शिक्षक पाठयवस्तु के प्रति जागरूक रहे कि प्रासंगिक घटनाएँ, विवरण व कार्य अनुभूतियाँ आदि विभिन्न वस्तुएँ किन मानवीय मूल्यों के प्रतिपादन में सहायक है एवं शिक्षक ने उन्हें आत्मसात् कर लिया है। शिक्षक में भी व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती है एवं कुछ शिक्षक इन मूल्यों के प्रति अधिक जागरूक हो सकतें हैं जबकि कुछ अन्य उतने नहीं? यदि सभी शिक्षक मूल्यों के प्रति जागरूक हो जाये तो निश्चितरूप से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा सभी शिक्षक एक से जागरूक नहीं हो सकते इसीलिए शोधार्थी ने प्रस्तुतशोधकार्य के माधयम से यह देखने का प्रयास किया है कि, हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की संचेतना का उनके विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। प्राय: देखा जाता है कि कक्षा शिक्षण में विषय निष्पादन पर अधिक जोर दिया जाता है जबकि विषयवस्तु में निहित कुछ विशिष्ट विचार, भाव, अनुभव अव्यक्त रूप में छिपे रहते हैं जिन्हें उजागर किया जाना आवश्यक होता है ऐसे अन्त:निहित मनोभाव विद्यार्थियों तक सम्प्रेशित करने का दायित्व विषय शिक्षक का होता है। शोधकार्य से ऐसी संभावना है कि शिक्षकों में पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की संचेतना के विकास में सहायक होगा जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को सकारात्मक रूप से सवारने एवं निखारने में सहायक होगा। शैक्षिक दृष्टिकोण सेशोध समस्या समसामयिक एवं उपयोगी भी जान पड़ती है क्योंकि वर्तमान में शिक्षक मुख्यरूप से विषय में निष्पादन पर जोर देते हैं जबकि वास्तव में उन्हें विद्यार्थियों के अन्तर्निहित गुणों के विकास पर धयान देना चाहिए।

उद्देष्य :-शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव का अधययन।

परिकल्पना :-शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का उनके छात्र/छात्रओं/विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर-

स्वतंत्र चर - मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता

परतंत्र चर - आध्यात्मिक बुद्धि

नियंत्रित चर - कक्षा 9वीं एवं आयु 12-14 वर्ष के छात्र

न्यादर्श - न्यादर्श में विद्यालयों की सूची में से हिन्दी विषय को पढ़ाने वाली 43 शिक्षिकाओं का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। इन शिक्षिकाओं परशोधार्थी द्वारा स्वानिर्मित मूल्यों संबंधी जागरूकता मापनी का प्रशासन एवं फलांकन कर उच्च एवं निम्न जागरूक शिक्षिकाओं का चयन किया गया। ये शिक्षिकाएँ जिन कक्षाओं में अध्यापन कार्य कर रही थी उनके विद्यार्थियों को निम्नानुसार न्यादर्श में चयनित किया गया -

तलिका क्रमांक - 01 न्यादर्श तालिका

शिक्षक जागरूकता स्तर		संख्या	कुलयोग
छात्र	उच्च निम्न	200 200	400
छात्रा	उच्च निम्न	200 200	400
विद्यार्थी (छात्र/छात्रा)	उच्च निम्न	400 400	800

उपकरण :- आध्यात्मिक बुद्धि मापनी - धर एवं धर द्वारा निर्मित

विधि :- न्यादर्श में चयनित विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं परशोधार्थी द्वारा निर्मित पाठ्यवस्तु में समाहित मूल्यों संबंधी जागरूकता मापनी का प्रशासन कर उच्च एवं निम्न जागरूक शिक्षक/शिक्षिकाओं के विद्यार्थियों पर आध्यात्मिक बुद्धि मापनी का प्रशासन किया गया एवं फलांकन के उपरांत परिणामों का विश्लेषण अगली कंडिका में प्रस्तुत किया गया।

परिणामों का विषलेशण एवं व्याख्या - इसे निम्नांकित सारणी में प्रस्तुत किया गया -

तालिका क्रमांक - 02 उच्च एवं निम्न मूल्यों के प्रति जागरूक शिक्षकों के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक बुद्धि के तुलनात्मक परिणाम -

जागरूकता स्तर		संख्या	मधयमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी'मान
छात्रा	उच्च निम्न	200 200	228.05 210.58	18.43 30.42	6.97	< 0.01
छात्रा	उच्च निम्न	200 200	224.88 207.90	19.46 24.99	7.55	< 0.01
विद्यार्थी (Nk=@ Nk=k)	उच्च निम्न	400 400	226.47 209.24	19.01 24.99	10.91	< 0.01

स्वतत्रंता के अंश - 398/798

0.05 स्तर पर सारणीमान - 1.96/1.96

0.01 स्तर पर सारणीमान - 2.59/2.58

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि पाठयवस्तु में समाहित मूल्यों के प्रति शिक्षिकाओं की जागरूकता का छात्र/छात्राओं एवं विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं। तीनों समूहों के लिए प्राप्त क्रौंतिक अनुपातों के मान क्रमंश: - 6.97, 7.55 एवं 10.91 हैं जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। उच्च जागरूकता वाले शिक्षिकाओं के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि निम्न जागरूकता वाले शिक्षकों की अपेक्षा

अधिक है। यह परिणाम स्वभाविक प्रतीत होता है क्योंकि आध्यात्मिक बुद्धि का मूल्यों के साथ सहचर्य होता है जो शिक्षक मूल्यों के प्रति जागरूक होगे वे अपने अध्यापन में इससे संबंधित बातों को विषयवस्तु से जोड़ते है जिससे विद्यार्थियों को जीवन की वास्तविकता एवं मानव जीवन का क्या उद्देश्य है? इस संबंध में ज्ञान मिलता है जो विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि के विकास में सहायक होता है।

निष्कर्ष

शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का उनके छात्र/छात्रओं/विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

Dey, Niradhar (2009) – Influence of Emotional Intelligence on Acaemic Self – Efficacy And Achievement -: Psycho Lingua Vol. 39 (2) Page – 171-174.

गैरेट हेनरी ई. एवं बुडवर्थ, आर.एस. (2007), शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकीय नई दिल्ली, कल्याणी पब्लिशर्स, नवीनतम संस्करण, पृ. सं. 330

कपिल, एच.के. (2005) सांख्यिकीय में मूल तत्व, आगरा (उ.प्र.), विनोद पुस्तक मंदिर, नवीनतम संस्करण, पृ. सं. 298

मंगल, एस.के. (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, (हिन्दी), नई दिल्ली, प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, प्राईवेट लिमिटेड, प्रथम संस्करण, पृ. सं. 170